जागरण सिटी लखनऊ 07/2/23 www.jagran.com

ा प्रदर्शन

टाले पर चुप्पी
निष्पक्ष जांच
। सरकार को
कहीं न कहीं
ाथ मिली हुई
सिंह चौहान
ी है। प्रदर्शन
न डूबे, प्रदेश
पूर्व विधायक
इंदल रावत,
चिव सुबोध
कृष्णकांत
जूद थे।

फास्ट फूड में बढ़ेंगी मोटे अनाज के उपयोग की संभावनाएं

जितेंद्र उपाध्याय • लखनऊ

केंद्र सरकार के मोटे अनाज को प्रोत्साहन देने के बाद अब इसके उत्पादन को लेकर संभावनाएं बढ़ने लगी हैं। किसानों ने भी सरकारी प्रोत्साहन व बाजार में मांग के सापेक्ष मोटे अन्न का उत्पादन बढ़ाने की तैयारी शुरू कर दी है। यहां सभी ब्लाकों में ज्वार-बाजरा और मक्के की खेती की जाती है। बाजार न होने से क्षेत्रफल में लगातार कमी हो रही है, लेकिन अब रकबा बढ़ने के आसार हैं।

80 के दशक में मोटा अनाज ही खास था, लेकिन सरकार ने 'श्री अन्न' का दर्जा देकर ने मोटे अनाज की जो ब्रांडिंग की है, उसका असर तेजी से हो रहा है और कम लागत में किसानों को अधिक फायदा मिलने की उम्मीद है। वर्तमान में लोग पिज्जा, माइक्रोनी, पास्ता, बिरियानी, कवाब एवं बर्गर चाव से खाते हैं।

श्री अन्नदाता

80 के दशक में मोटा अनाज ही था खास, अब तीन प्रतिशत ही करते हैं मोटे अनाज की खेती

इसमें मोटे अनाज के प्रयोग की संभावनाएं तलाशी जानी चाहिए। बच्चों की मोटे अनाज के प्रति दिलचस्पी बढ़ाने के लिए फास्ट फूड में इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। बाजार में अच्छे दाम न मिलने के कारण रकबा धीरे-धीरे घटता चला गया, मौजूदा समय में बख्शी का तालाब के मुंशी खेड़ा, पश्चिम गांव, मझोरिया, रैथा, कठवारा, दुगवर, रनियामऊ, गोपरामऊ, भौली एवं पर्वतपुर गांव में दो से तीन प्रतिशत किसान ही बाजरे की खेती करते हैं।

परंपरागत फसलों में कीट एवं बीमारियों के प्रबंधन की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। मोटे अनाज ज्वार, बाजरा, मक्का, सावां एवं कोदो में बहुत कम कीट और बीमारियां लगती हैं। कम खर्च पर इसका अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। इससे सरकार की किसानों की आय दो गुणा करने की संभावनाएं भी बढ़ेंगी। सरकार के प्रोत्साहन से एक बार फिर किसान इसकी ओर जरूर रुख करेंगे। सरकारी प्रयास धरातल पर उतारने की जरूरत है।

– डा. सत्येंद्र कुमार सिंह, कृषि विशेषज्ञ, सीबी गुप्त कृषि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बख्शी का तालाब

हम लोगों के समय में बहुत कम घरों में चावल की जगह पर सांवा, कोदो, कांकुन तथा बाजरे का भात बनता था। हम सब लोग इसे बड़े चाव से खाते थे। अब खाने भर के लिए ये अनाज पैदा करते हैं। सरकार यदि खरीदेगी तो इसका उत्पादन बढ़ाया जाएगा। मैं भी ज्वार, बाजरे की खेती करता हूं।

–राम सरन सिंह, किसान, टिकरी, बख्शी का तालाब

ऐसे बढ़ेगा उत्पादन

- गांव में किसानों की लगेगी पाठशाला।
- किसानों को मुफ्त बीज के साथ ही मिलेगी प्रोत्साहन राशि।
- रकबा बढ़ाने के लिए विशेषज्ञों का ब्लाक स्तर पर होगा दौरा।
- किसानों के सामने आने वाली परेशानियों को दूर करने का किया जाएगा प्रयास।
- उर्वरक, सिंचाई, कीटनाशक का प्रयोग न करने के बारे में किसानों को जानकारी दी जाएगी।
- फास्ट फूड में मोटे अनाज के प्रयोग के बारे में किया जाएगा जागरूक।

खेती पर एक नजर

ब्लाक	क्षेत्रफल
मोहनलालगंज	600 हेक्टेयर
बख्शी का तालाब	600 हेक्टेयर
माल	600 हेक्टेयर
चिनहट	500 हेक्टेयर
काकोरी	700 हेक्टेयर
मलिहाबाद	800
गोसाईगंज	700 हेक्टेयर
सरोजनीनगर	800 हेक्टेयर
कुल खेती	5,300 हेक्टेयर
प्रतिवर्ष उत्पादन (क्विंटल में)	
ज्वार	59,143
बाजरा	16,608
मक्का	31,180